केकर बारात आय?

शादियों में नाई की भूमिका सबसे बढ़चढ़ कर होती है। लेकिन कई बार उसकी अति सक्रियता बखेड़ा भी बनाती है। ऐसे ही एक बार हमारे बुन्देलखण्ड के बाँदा जिले की बात है। एक बार एक ठाकुर साहब मोड़ा (बेटे) की बारात जात रही। बारात मा सबसे आगे की बैलगाड़ी मा नाई चलत रओ जवन गांव ते बारात निकरत लोग उत्सुकता से देखत और पूछत ।

'का भइया, कौने गांव की केकर बारात आय?'

नाई सबसे आगे रहा और लपक के बोलेन– 'बारात तौ पारा के लंबरदार के आय, पै 'जोड़ा–जामा' (दूल्हे के पीले कपड़े) हमाओ आय'

पूछने वाला सुनकर अपने रस्ते और बारात अपने रस्ते लेकिन लंबरदार भड़क गए– काये रे नाऊ, तैने जोड़ा–जामा फोकट मा दीन्हे का? कीमत का चार गुना नेग न लए का? लपक के काहे चिल्लात कि जोड़ा–जामा तोर आय'

नाई दुबक गया – हौ लंबरदार, अब न कहब।

आगे फिर काऊ ने वही बात पूछ दइ – केकर बारात आय भई?

नाऊ फिर लपक के अबकि संभल के बोले – 'भइया बारात तो पारा के लंबरदार के आय अउर जोड़ा–जामा उनहीं के आय'

लंबरदार अबकि और गुस्से से नाई पे भड़के – तोहे ई बताबे के का जरूरत कि 'जोड़ा–जामा' केकर आय...

नाई फिर गलती मान लिहेस।

आगे बढ़ी बारात तो फिर वही उत्सुकता। किसी ने फिर पूछा कि केकर बारात आय?

अबकि नाई एकदम गलती न करने के इरादे से आदतन बोला– 'ऐ भइया एतना जान लौ कि बारात पारा के रहें वारे लंबरदार के आय, औ जोड़ा–जामा केकर आय ई हमका पता न आय'.....

(एहि के बाद बारात तो आगे गई लेकिन लंबरदार ने नाई के वापिस पारा पठाय दओ)

फोटो– गूगल

बुंदेली गजल

बदमाशी की चाल उलट गयी कैसी रई
भैया जू की मट्टी छंट गयी कैसी रई

फर्जी वोट डारतन पकरे गए लल्लू
पोंद फूट गए धुतिया फट गई कैसी रई

दारू मुर्गा हाथ जुरई में बीदे रये
बोंनी नई भई जमीं उखट गयी कैसी रई

सबसें कैत फिरत भैया धोखौ हो गऔ
बस एकई चौपाई रट गयी कैसी रई

हार गए सरपंची जब सें धनुआ सें
रातन तक की नींद उचट गयी कैसी रई

हाथ भरे की नाक लगा कें घूमत्ते
सुगम देख लो जड़ सें कट गयी कैसी रई

– महेश कटारे सुगम

पोंद= नितम्ब / धुतिया= धोती / बोनी =बुवाई / उखट=सूखना